P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 Vol-I* Issue- VII* October - 2016
E: ISSN NO.: 2455-0817 **Remarking An Analisation**

# भारतीय व्रत कथाओं में सामाजिक छवि

**कामिनी ओझा**
सहायक आचार्या,
हिन्दी विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर , राजस्थान

**सारांश**

भारतीय साहित्य एवं संस्कृति का यथार्थ परिचय प्राप्त करने के लिए भारत में बसे हुए भिन्न–भिन्न जाति एवं धर्म के लोगों का परिचय प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है। भारत में हजारों वर्षों से विविध जाति, सम्प्रदाय एवं धर्म के लोग आपस में 'सर्वधर्मसम' एवं 'सर्वधर्मसम' जैसी उदार चित्त के साथ हिल मिलकर रहते है। यहाँ के लोगों का रहन–सहन, खान–पान, आचार–विचार, तीज–त्यौहार, व्रत–उत्सव और धर्म सम्पूर्ण विश्व में अपनी एक अलग पहचान रखते है और यह सारी चीजें यहाँ के समाज की जरूरतें है और संस्कृति का अभिन्न अंग है। यही कुछ ऐसी चीजें है जिनके बल–बूतें पर ही भारतीय समाज पूरे जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाने में कामयाब हुआ है। हमारे समाज का जो परिदृश्य है वह जगत के मानस पटल पर अपनी एक अलग ही छवि रखता है तो वहीं यहाँ की संस्कृति पूरे विश्व पर अपने में समाहित कर लेने को आतुर दिखाई देती है। भारतीय धर्म और संस्कृति का यह सबसे महान गुण रहा है और यही गुण हमें 'व्रत कथाओं' में भी देखने को मिलता है जो हमें यह सन्देश देता है कि व्यक्ति चाहे कैसा भी गुनाह कर ले और जब वह आपस में सही रास्ते पर आ जाये तो उसे क्षमा कर देना चाहिये। शायद इसी बात को ध्यान में रखते हुए देवी या देवता भी अपने भक्तों की कुछ बातों को अनदेखा कर क्षमा कर देते है।

**मुख्य शब्द :** सामाजिक प्रेरणा, धार्मिक प्रेरणा, रीति–रिवाज, सुसन्देश, वसुधैव कुटुम्बकम की भावना।

**प्रस्तावना**

साहित्य समाज का दर्पण होता है चाहे वह शिष्ट साहित्य हो, लोक साहित्य हो या धार्मिक साहित्य। व्रत कथाएँ भी हमारे साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है और इनमें भी हमारे समाज का बहुत ही सटीक ढंग से निरूपण हुआ है। हमारा समाज कैसा है? तथा समाज का धार्मिक मान्यताएँ और विश्वास क्या हैं? उसकी आस्था किन में है? तथा समाज का धार्मिक रीति–रिवाजों को निभाने का दायित्व क्या है इन तमाम बातों के दर्शन हमें व्रत कथाओं में देखने को मिलते हैं। साथ ही हमारे समाज में किन–किन वर्गों के लोगों का क्या महत्व है? किन–किन जातियों में लोगों का क्या योगदान रहा है या उनका चरित्र–चित्रण कैसा रहा है? इन तमाम बातों का भी इन व्रत कथाओं में जिक्र आता है। इतना ही नहीं इन व्रत कथाओं के अध्ययन से हमारे सामने भारतीय समाज की जो छवि उभर कर सामने आती है वह बहुत प्रशंसनीय और मन को मोह लेने वाली है। यहाँ एक दूसरे के प्रति प्रेम, भाईचारा, शिष्टाचार है तो, वहीं दूसरी तरफ मान–मर्यादाओं और आस्था–विश्वास की सुनहरी झलक और इन सभी के साथ यहाँ के तीज–त्यौहारों, मेलों–उत्सवों से सरस और उल्लासमय जीवन का जो सम्पूर्ण दृश्य हमारी नजरों के सामने आता है और इस तरह के दृश्यों को देखकर कोई भी व्यक्ति हमारी इस समाज पर मोहित हुए बिना नहीं रह सकता। तो व्रत–कथाओं जैसे धार्मिक अनुष्ठान की तो बात ही अलग है इन व्रतों का तो यहाँ के प्रत्येक सामाजिक प्राणी के जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे समाज का तमाम पक्षों के साथ एक महत्वपूर्ण पक्ष है धार्मिक पक्ष और धार्मिक पक्ष की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है 'व्रत'। इन व्रतों को करने की विधि और इनके उजमने (उद्यापन) के सामाजिक महत्व को देखते ही मन हर्षित होने लगता है। इन तमाम बातों को हम अलग–अलग बिन्दुओं में विस्तारपूर्वक समझने की कोशिश करेंगे जो इस तरह है

व्रत कथाओं को ध्यान में रखकर अगर सामाजिक परिवेश की बात करें तो ऐसा लगता है कि हमारा पूरा–का–पूरा समाज धर्म प्रधान समाज है। यहाँ ऐसा कोई दिन नहीं, कोई सप्ताह नहीं, कोई महीना या वर्ष नहीं जिस दिन व्रत नहीं किया जाता हों और ऐसा कोई व्रत नहीं जिसके पीछे कथा नहीं हो और

ऐसी कोई कथा नहीं जिसमें सामाजिक परिवेश का अंकन नहीं हुआ हो। अगर हम भारतीय जन–जीवन और सामाजिक परिवेश को देखे तो जो सुनहरे, मनमोहक, प्रेरणादायी दृश्य हमारी नजरों के सामने उभर कर आते है वास्तव में यहाँ के सामाजिक जीवन की श्रेष्ठता का प्रमाण है।

**धार्मिक माहौल**

भारतीय व्रत कथाओं पर दृष्टि डालते ही जो बात सामने आती है वह है धर्म की प्रधानता। हमारा समाज धर्म के बंधन में इस तरह बंधा हुआ है कि उसे धर्म से अलग करके देखना पागलपन होगा। हमारे संस्कारों में, हमारे व्यवहार में, हमारे आचार–विचारों में धर्म इतना हावी है कि हम उससे हटकर कुछ करने की सोच भी नहीं कह सकतें चाहे हमारे साथ कितनी भी मुश्किलें क्यों नहीं आ जाए। धर्म की रक्षा के लिए तो हरिश्चन्द्र जैसे दानी राजा ने अपना राज–पाट छोड़कर हरिजन के यहां नौकरी करना स्वीकार कर लिया पर अपना धर्म नहीं छोड़ा देखो – '.....अेक मोट्यार डावड़ी आपरे बैटा रो दाग देवण ने आई वा इती गरीबणी के वीरे कनै लास ढाकवानै कांटियो ई कोनी। जरै उण आपरी आधी साड़ी फाड़ने कोट्यौ। राजा वीं कना सू कर मांग्यो, पण वीं गरीबणी रौ जीव लेवो तो है। टक्को अेक है कोनी। अबै अेक कांनी, दया ने माफी तो दूजी कांनी धरम ने करतब ऊभो हो, अठी ने कुंओं ने उठीनै खाई। धरम संकट आयो तो जोर इज आयो.....।'

इस तरह की कोई घटनाएँ हमारे समाज को जहाँ धर्म पर चलने की शिक्षा देती है तो वहीं कर्त्तव्य परायणता भी सिखाती है। यह भारतीय समाज का ही स्वरूप है कि यहाँ ऐसे ऐसे महान पुरूष भी हुए जिन्होंने धर्म की रक्षा के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया पर धर्म पर आँच नहीं आने दी। तभी तो कहा गया

धर जातां धर्म पलटता, त्रिया पड़तां ताव।
अै तीनू दिन मरण रा, काह रंग काह राव।।

**सादा जीवन उच्च विचार**

भारतीय समाज के समस्त क्रिया–कलापों एवं व्रतों पर नजर डालें तो समाज को जो स्वरूप हमारे सामने आता है उससे यहीं प्रतीत होता है कि हमारे यहाँ के लोगों का रहन सहन, खान पान बिल्कुल सामान्य है और विचार बहुत ऊँचे है। यही कारण है कि आज हमारा भारतीय समाज सम्पूर्ण विश्व के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत और मिसाल के रूप में सामने आता है – जैसा कि वैशाख व्रत कथा में देखने को मिलता है जब राजा कुम्हार से खुश होकर उसे आधा किला देने को तैयार हो जाता है फिर भी कुम्हार यही सकता है कि हम तो यही 'ठीक है', देखें–''..... कुम्हार ने ई राजा घणौ कह्यौ, पण वे दोन्यूं किल्ला में नीं ग्या बोल्या आपरी मेहरबानी सूं अठै ई ठीक हां. जद कुम्हार नै ओंरू घणौ सारो धन–माल दियौ।''

**नित–नियमों की पालना**

यहाँ के सामाजिक परिवेश की खास बात यह है कि यहां बहुत से स्त्री–पुरूष आपको ऐसे मिलेंगे जो अपना जीवन नियमों से बँधकर जीना चाहते हैं। जैसे कि ईश्वर की पूजा अर्चना करना, मंदिर जाना, गाय को रोटी देना, नित्य स्नान करने के बाद भोजन करना, व्रत करना, उपवास रखना जैसे हजारो नियम समाज में देखने को मिल जाते हैं जिन्हें अलग अलग लोग अपने अपने तरीकों से निभाते है। देखों एक बुढिया भी अपने नियम इस तरह निभाती है, देखो – ''ऐक डोकरी ही। वां बिरामणी ही। वीरै सात बेटा हा। बिरामणी डोकर हर बरस काती न्हावती। औ नेम घणा बरसा सूं पाळती रोज मीना भर पक्को पेटियौ, सोना रो टक्को ने अेक सोना रौ आंवळो बिरामण नै नेम सू देवमौ। का'णी रोज सुणणी अर पछै जीमणौ।''

**अतिथि देवो भव की भावना**

ऐसी चीजें सिर्फ भारतीय संस्कृति का ही हिस्सा है। हमारे यहाँ मेहमान को भगवान का दर्जा दिया गया। यहाँ के लोग स्वयं भूखे रहकर भी घर आये मेहमान को भोजन करवाते हैं और बहुत से लोगों ने तो यह नियम बना रखा है इसी कारण तो सती अनुसूया जैसी महान् सती ने भी निर्वस्त्र होना स्वीकार किया पर घर आए मेहमान को बिना भोजन नहीं जाने दिया। इसी तरह की बातों के दर्शन हमारी इन व्रत कथाओं में भी कई जगह देखने को मिलते हैं। देखो–''अैक गांम में बिरामण ने बिरामणी रैवतां। इणां री सौजवण मांये दो बेटां ने अेक रंडापौ काढती बेटी जिदंगी पूरी करती। घरै आया नै मां जाया मानता अर वींयानै जीमाय नै जीमता, औ इणां रौ नेम–धरम हौ। समाजोग कोई नीं आवै तो गऊबां ने चारौ ने चिड़कल्यां नै दांणो न्हाखणै भोजन करता।''

**राजा का अपनी प्रजा के प्रति समर्पित होना**

आजादी से पहले भारत में भी राजाओं का राज रहा है यह बात किसी से छिपी हुई नहीं है और यहाँ अच्छे और बुरे दोनों तरह के राजा रहे है पर ज्यादातर राजा अच्छे, दानी, ज्ञानी, ध्यानी, वीर, योद्धा, ईश्वर भक्त और अपनी पत्नी के प्रति समर्पित ही रहे है। ऐसे अनेक राजाओं का उल्लेख इतिहास के पन्नों में भरा पड़ा है। परन्तु कुछ राजा ऐसे भी हुए है जिन्होंने अपनी प्रजा की भलाई के लिए, उनके विकास के लिए और उनकी समृद्धि के लिए अपना सब कुछ खो कर भी प्रजा के लिए ऐसे काम किये जो इतिहास में अमर हो जाये और उनके किस्से कहानियाँ आज भी आम जनता में चर्चा का विषय होती है। यह असल में उस राजा की कर्त्तव्य परायणता का ही फल है। चाहे वह राजा हरिश्चन्द्र हो या महान सम्राट 'अशोक'। आज तक लोग उन्हें क्यों याद करते है? क्योंकि उन्होंने ऐसे काम किये जो समाज और सम्पूर्ण जगत के लिये प्रेरणा स्त्रोत बने।

इसी तरह के कुछ राजाओं का उल्लेख हमारी भारतीय व्रत कथाओं में भी देखने को मिलता है जिन्होंने अपनी प्रजा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। अपनी प्रजा के दुःख से दुःखी राजा की एक बानगी देखों–''सतजुग री बात है। मान्धाता राजा अेक नगर में चकवै राज करतो। प्रजा सुखी ही। पण अेक वार राज में तीन बरस लगोलग काळ पडग्यो। बिरखा री छांट ई कोनी पड़ी। चौफेर त्राही त्राही मचगी। जग्य, हवन पिंड दान आद सै सुभ काम बंद हुयग्या। सैं छकड़ी भूलग्या।

राजा प्रजा रै दुःख सूं दुःखी हो। आखर उपाव सोचण लागौ। केई विचार आवण लागा। व्है सके जांण–अजांण में म्हारा सूं कोई खोटा करम हुया व्है। जिंरी आ सजा मिळी लागै, पण इस्यौ की जांण्यौ तो कोनी।''

यह एक अच्छे राजा की चिन्ता है जो अपनी सन्तान समान प्रजा के लिए की जा रही है। ऐसे राजाओं की चिंता हमेशा अविस्मरणशील रहेगी। इतना ही नहीं बहुत से राजा तो ऐसे भी उन्होंने वक्त रहते राज–पाट का मोह तक त्याग कर ईश्वर भक्ति में लीन हो गये और उन्होंने अपनी सन्तानों को भी ऐसी ही प्रेरणा दी वह भी ईश्वर भक्ति करने लगे गई देखों – ''सतजुग में केदार नोवधारी अेक राजा लांठो तपधारी हो। वीरौ तेज घणौ तीखों हो। औसथा रै तीजै पड़ाव में राजकंवर नै राजपाट सूपनै तपोवन में जाय जम्यो। इण इज राजा रै वृंदा नाव री कन्या ही। उण ई उमर भर ब्रह्मचारिणी रैयने जमनाजी री पेडंया पर घोर तपसा करी। जद वीरी तप–तपसा पाकी तो भगवान् परगट हुआ अर बोल्या – 'मांग, कीं वर मांग।'

**उद्देश्य**

हमारे सामाजिक परिवेश में सामंती व्यवस्था का भी अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। आज हमारी वह भी सामाजिक मान्यताएँ है या जो भी सांस्कृतिक विरासत है उन सबके पीछे कई महान राजाओं की त्याग–तपस्या छिपी हुई है, जिसे हम भुला नहीं सकते। हालांकि कुछ राजा ऐसे भी हुए है जिन्होंने अपना विलासी जीवन बिताया और प्रजा के लिए कुछ नहीं किया। परन्तु ऐसे भी बहुत से राजाओं के नाम है जिन्होंने समाज को एक नया स्वरूप दिया, नई पहचान दी, नये सामाजिक मूल्य दिये और साथ ही उन्हें ईश्वर भक्ति की प्रेरणा भी दी। उस जमाने में जितना असर राजा के हुक्म का होता था उतना असर आज प्रधानमंत्री का भी नहीं होता। इसलिए उस वक्त अगर राजा ने कह दिया कि वे व्रत करना है तो राज में एक भी स्त्री–पुरूष नहीं बचता था की वह व्रत नहीं करता हो लेकिन आज राज की स्थितियाँ दूसरी है। इसलिए हमारे सामाजिक परिवेश पर सामंती शासन–व्यवस्था का जो असर है या जिस तरह दानी, ज्ञानी और गुणीजन राजाओं ने हमारे को जो जीवन मूल्य दिये है उन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता।

**निष्कर्ष**

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि भारतीय व्रत कथाओं में जो झांकी हमारे सामाजिक परिवेश की प्रस्तुत हुई है वह वास्तविकता में सोने के अक्षरों में लिखे जाने योग्य है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. अजा एकादशी री वात–रा. व्रत कथावां, सं. अर्जुन सिंह शेखावत,वैलविश पब्लिशर्स, पीतमपुरा, दिल्ली, सन् 1999, पृ. 169,
2. बैशाख न्हावत री व्रत कथा।
3. आंवळां नवमी री व्रत कथा।
4. सकरांत री व्रत कथा।
5. देव सोवणी अेकादसी री व्रत कथा।
6. कांन जलम आठम री बात (द्वितीय)